

बुधवार • 10.11.2021

अमर उजाला

05

पौधों को पोषक तत्व उपलब्ध कराते हैं जैव उर्वरक

कानपुर। सीएसए के कलौज स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने मंगलवार को जलालाबाद विकास खंड के डिगसगा गांव में कृषक गोष्ठी का आयोजन किया। डॉ. खान ने बताया कि जैव उर्वरक जीवाणुओं का संग्रह है, जो पौधों को पोषक तत्व उपलब्ध कराते हैं। इनका प्रयोग करने से मृदा एवं जल दूषित नहीं होते हैं। (संवाद)

अमर उजाला

बुधवार • 10.11.2021

02

अब बीजों को हेल्दी करेगी हल्दी

सीएसए के वैज्ञानिकों ने विकसित की बीज शोधन की नई तकनीक, फसल में नहीं लगेंगी कीड़े

दिव्यांश सिंह

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने दी मंजूरी, तकनीक को पेटेंट कराने की तैयारी

करक्यूमिन की कड़वाहट से दूर रहते हैं कीड़े

कानपुर। अब हल्दी बीजों को हेल्दी करेगी। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) के बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के डॉ. सीएल मैया और उनकी टीम ने हल्दी से अहर के बीजों को शोधित करने में सफलता पाई है। अन्य बीजों पर ट्रायल करने की तैयारी है। तकनीक को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईएमआर) ने मंजूरी दे दी है।

डॉ. मैया ने इस शोध को 28 जनवरी 2020 में थाईलैंड में आयोजित अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस में प्रस्तुत किया था। इसके लिए उन्हें डिप्लोमा इन एग्रीकल्चर से सम्मानित किया गया है।

का अबाई मिला था। उन्होंने हल्दी के अलावा नीम, थूकैलिटस, लेमन ग्रास, तुलसी, लैन्टाना की पत्तियों और रस से भी बीजों को शोधित किया पर सबसे बेहतर परिणाम हल्दी में मिले। उन्होंने बताया कि चार से पांच ग्राम हल्दी को एक किलोग्राम बीज के पैकेट में रख दें। इससे बीज का भंडारण बढ़िया होगा। साथ ही फसल में कीड़े भी नहीं लगेंगे। 2020 में थाईलैंड में आयोजित विवि के निदेशक शोध डॉक्टर एचजी प्रकाश ने बताया कि तकनीक को पेटेंट कराने की प्रक्रिया चल रही है। (स्वा)

डॉ. मैया ने बताया कि हल्दी में कड़वाहट पैदा करने वाला तत्व करक्यूमिन होता है, जिसको वजह से केट्टोरिया, फंगस और कीड़े नहीं लग पाते हैं। वह अब इस तत्व को अलग करके बीजों में प्रयोग करने वाले हैं। इससे हल्दी की मात्रा और कम हो जाएगी। हल्दी में एंटी ऑक्सिडेंट और एंटी माइक्रोबियल गुण भी होते हैं। इसी कारण से घर में रखी हल्दी में भी कीड़े नहीं पड़ते हैं।

नैनो टेक्नोलॉजी पर करेंगे काम

निदेशक शोध डॉ. एचजी प्रकाश ने बताया कि भविष्य में नैनो टेक्नोलॉजी पर काम करने की योजना है। इससे हल्दी की मात्रा और भी कम हो सकेगी। नैनो पार्टिकल्स से बस बीजों पर हल्दी का सें को तह से छिड़काव किया जाएगा। अभी कई तरह के कोमकलॉस से बीजों को शोधित किया जाता है, जिसके परिणाम नुकसानदायक होते हैं।

शोधित बीज के फायदे

अधिक अनुभव, अधिक प्रबल पौधे, प्रारंभिक रोगों पर प्रभावी निवारण, स्वस्थ पौधों को सूखने अधिक तेजी से पैदावार बढ़ेगी।

अमर उजाला

बुधवार • 10.11.2021

kanpur.amarujala.com

मोटे अनाजों से बढ़ाएं रोग प्रतिरोधक क्षमता

कानपुर। सीएसए में महिला सशक्तीकरण विषय चल रहे प्रशिक्षण के दूसरे दिन गृह वैज्ञानिक डॉ. पुष्पा देवी ने बताया कि मोटे अनाज जैसे ज्वार, बाजरा, मक्का, जौ आदि खाने से कुपोषण को दूर किया जा सकता है। इन अनाजों के सेवन से प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ती है। डॉ. प्रिया वशिष्ठ ने बताया कि बताया कि हमें घर में पोषण गृह वाटिका बनानी चाहिए ताकि सब्जियां-फल आदि मिल सकें। इस मौके पर डॉ. पूनम सिंह, डॉ. संजीव कुमार सिंह, डॉ. राजीव, डॉ. एसबी पाल आदि मौजूद रहे। (संवाद)

राष्ट्रीय

सहारा

कानपुर • बुधवार • 10 नवम्बर • 2021

मोटे अनाजों का सेवन रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में मददगार

कानपुर (एसएनबी)। सीएसए में आयोजित कृषक महिलाओं के सशक्तीकरण प्रशिक्षण कार्यशाला में मंगलवार को कृषि वैज्ञानिकों ने महिलाओं को मोटे अनाजों के सेवन को लेकर प्रोत्साहित किया गया। कृषि वैज्ञानिकों ने बताया कि वर्तमान समय में जब विभिन्न महामारी रोग मुंह पसारे हुए हैं, मोटे अनाज का सेवन शरीर की रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ा रोगों की चपेट में आने से बचाने में मददगार साबित हो सकता है।

विवि के गृह विज्ञान विभाग की वैज्ञानिक डॉ.पुष्पा देवी ने 'मोटा अनाज बढ़ाये रोग प्रतिरोधक क्षमता' विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने महिलाओं को बताया कि यदि आप मोटा अनाज जैसे- ज्वार, बाजरा, मक्का, जौ, रागी, मडुआ एवं सांवा का फसलोत्पादन कर भोजन की थाली में प्रयोग करें तो कुपोषण को दूर किया जा सकता है। उन्होंने इन अनाजों से विभिन्न व्यंजनों को तैयार करने की विधियों पर भी चर्चा की। डॉ.प्रिया

वशिष्ठ ने पोषण गृह वाटिका व उसके प्रबंधन, डॉ.पूनम सिंह ने सुरक्षित अनाज भंडारण तकनीक, डॉ.संजीव कुमार सिंह ने सखियों की व्यावसायिक खेती, डॉ.राजीव ने संरक्षित सब्जी एवं पौध उत्पादन के साथ ही आलू के औषधीय गुणों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि आलू से तेल का स्पर्श कराय जाय तो यह बहुत लाभदायक होता है। कार्यशाला संचालन में डॉ.एसबी पाल, डॉ.ए.एस.सिंह, डॉ.सुभाष चन्द्रा, डॉ.सोहन लाल वर्मा ने सहयोग किया।

सीएसए के मृदा वैज्ञानिक ने कृषक गोष्ठी में दी जानकारी बुवाई करते समय जैव उर्वरकों का ही करें उपयोग: डॉ. खान

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित अनीमी विद्युत कृषि विज्ञान केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने जलालाबाद विकास खंड के डिगसरा ग्राम में फसलों में जैव उर्वरकों का प्रयोग विषय पर कृषक गोष्ठी का आयोजन किया। इस अवसर पर डॉ. खान ने बताया कि जैव उर्वरकों का प्रयोग करना फसलों के लिए पोषक तत्व उपलब्ध कराने का एक अच्छा स्रोत है। उन्होंने कहा कि जैव उर्वरक मूलतः जीवाणुओं का संग्रह है जो पौधों के लिए पोषक तत्व उपलब्ध कराते हैं। जैव उर्वरक प्रयोग करने से मृदा व जल दूषित नहीं होते हैं क्योंकि यह मृदा के ऊपरी हिस्से में रहकर अपना जीवन यापन करते हैं। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि जैव उर्वरकों को एक बार उपयोग में लाने से यह कई वर्षों तक मृदा में बने रहते हैं। पौधों को पोषक तत्व उपलब्ध कराते रहते हैं जिसके कारण फसलों की उत्पादकता में दुष्प्रभाव नहीं बढ़ता है, बल्कि उत्पादकता में वृद्धि होती है। जैव उर्वरक फसलों को पोषक तत्व उपलब्ध कराने के साथ-साथ कई मृदा जनित बीमारियों को रोकथाम में भी सहायक है। जैव उर्वरकों में एजोटोबैक्टर एक वायुजीवी जीवाणु है जो वायुमंडलीय नाइट्रोजन को संग्रहित करने में सक्षम है। यह जीवाणु उन मृदा में प्रभावी ढंग से कार्य करते



हैं जिन मृदा में जैविक पदार्थ पर्याप्त मात्रा में होता है। एजोटोबैक्टर अदलहनी फसलें जैसे गेहूँ, सरसों, व सब्जियों में प्रयोग किया जाता है। एजोटोबैक्टर आमतौर पर हेक्टियर 15 से 35 किलोग्राम नाइट्रोजन मिट्टी में संचय कर देता है। इसी तरह राइजोबियम जीवाणु को दलहनी फसलों जैसे चना, मटर, मसूर आदि में प्रयोग किया जाता है जो 50 से 100 किलोग्राम नत्रजन संचय कर देता है। केंद्र के मौसम वैज्ञानिक डॉ. अमरेंद्र यादव ने बताया कि पीएसवी जीवाणु जो मृदा में स्थिर व अनुलनशील फॉस्फोरस को घुलनशील बनाने का कार्य करता है। 30 से 50 किलोग्राम फॉस्फोरस प्रति हेक्टियर पौधों को उपलब्ध हो जाता है। इसके साथ ही उन्होंने बताया कि फॉस्फोरस की उपलब्धता में 10 से 15 किलोग्राम प्रति हेक्टियर की वृद्धि हो जाती है। जैव उर्वरकों से बीज मृदा एवं जड़ शोषण किया जाता है। बीज उपचार के लिए उन्होंने बताया कि 200 ग्राम का जैव उर्वरक 10 किलोग्राम

पौधों के लिए पोषक तत्व उपलब्ध कराते हैं जैव उर्वरक



रोकथाम में भी सहायक है। इसमें मौजूद एजोटोबैक्टर एक वायुजीवी जीवाणु है जो वायुमंडलीय नाइट्रोजन को संग्रहित करने में सक्षम है यह जीवाणु उस मृदा में प्रभावी ढंग से कार्य करते हैं जिस मृदा में जैविक पदार्थ पर्याप्त मात्रा में होता है। एजोटोबैक्टर अदलहनी फसलें जैसे गेहूँ, सरसों, एवं सब्जियों में प्रयोग किया जाता है। इसी प्रकार राइजोबियम जीवाणु को दलहनी फसलों जैसे चना, मटर, मसूर आदि में प्रयोग किया जाता है मृदा उपचार के लिए डॉक्टर मिश्रा ने बताया कि 50 किलोग्राम जैव उर्वरक को 50 किलोग्राम गोबर में मिलाकर 2.4 घंटे रखने के बाद एक हेक्टेयर खेत में समान मात्रा में छलने चाहिए। उन्होंने कहा कि जैव उर्वरक प्रयोग से सभी फसलों को लाभ होता है। जिससे कि फसल उत्पादन लागत में कमी आती है। और किसान की आय में वृद्धि होती है। इस अवसर पर केंद्र के अमित प्रताप सिंह एवं प्रगतिशील किसान राहुल पंचपुरा, भगवानदीन, राम निहोर, राम कुमार एवं राम आसरे साथ कई मृदा जनित बीमारियों की

8 दैनिक जागरण कानपुर, 10 नवंबर, 2021

मोटे अनाजों से बढ़ाएं रोग प्रतिरोधक क्षमता : डा. पुष्पा

जासं, कानपुर : ज्वार, बाजरा, मक्का, जौ जैसे मोटे अनाज का सेवन करने से मनुष्य के शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता तेजी से बढ़ती है। लिहाजा खाने की थाली में मोटे अनाज से बनी सामग्री जरूर होनी चाहिए। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि में पांच दिवसीय महिला सशक्तिकरण विषय पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के दूसरे दिन वैज्ञानिक डा. पुष्पा देवी ने यह जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि मोटे अनाजों का उत्पादन ज्यादा किया जाना चाहिए, ताकि कुपोषण को दूर भगाया जा सके। गृह विज्ञान विभाग की वैज्ञानिक डा. प्रिया वशिष्ठ ने सभी को पोषण

सीएसए विवि में महिला सशक्तिकरण पर प्रशिक्षण कार्यक्रम में वैज्ञानिकों ने दी जानकारी

गृहवाटिका का महत्व व प्रबंधन के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि कुपोषण से बचने के लिए सभी को अपने घरों के आसपास की खाली भूमि पर पोषण गृहवाटिका बनानी चाहिए। इस वाटिका में सभी प्रकार की सब्जियों के पौधे, बीज व फलदार पौधे लगाने चाहिए। ताकि लोगों को वर्ष भर सब्जी एवं फल मिलते रहे। डा. पूनम सिंह सहायक प्राध्यापक डा. संजीव सिंह, डा. राजीव, डा. एसबी पाल, डा. एके सिंह, डा. सुभाष चंद्रा, डा. सोहनलाल वर्मा रहे।